एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के साथ काम करने का अनुभव

ज्योत्स्ना लाल और हैदर मेहदी रिज़वी

पृष्ठभूमि

यह लेख दिल्ली की हज़रत निज़ामुद्दीन बस्ती के प्राथमिक नगरपालिका स्कूल में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने से सम्बन्धित एक परियोजना के बारे में है।

अपनी धरोहर के संरक्षण को अकसर सामाजिक-आर्थिक विकास से पृथक करके देखा जाता है। निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण पहल[1] संरक्षण और प्रदर्शन पर पुनर्विचार करने का एक उदाहरण है कि धरोहर का संरक्षण सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण क़दम है।

दिल्ली के निज़ामुद्दीन क्षेत्र में स्थित – हुमायूँ का मक़बरा लगातार विकसित होता रहा है। यह 13वीं शताब्दी से बसा हुआ है। पिछले 700 सालों में प्रतिष्ठित सूफ़ी सन्त हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह के निकट कई विपुल स्मारकीय मक़बरों का निर्माण हुआ। 2007 में सार्वजनिक भागीदार के रूप में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई), केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी), दक्षिणी दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) और निजी भागीदार के रूप में आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन (एकेएफ़) तथा आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर (ऐकेटीसी) के बीच सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के तहत एक समझौता/एमओयू दस्तावेज़ तैयार हुआ। उसके बाद आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर ने 224 एकड़ में फैली एक विशाल शहरी नवीनीकरण पहल की शुरुआत की। इस परियोजना का उद्देश्य निर्मित शहरी धरोहर और पर्यावरण विकास का संरक्षण करते हुए, निज़ामुद्दीन बस्ती में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना था।

2008 से इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक बहु-विषयक टीम स्थानीय समुदायों के साथ काम कर रही है। एक नब्बे एकड़ का नगर पार्क और क़रीब पचास स्मारकों के संरक्षण का काम करने के दौरान परियोजना का मूल उद्देश्य यह रहा है कि किस तरह से समुदाय की सांस्कृतिक सम्पत्ति के लाभ का इस्तेमाल उन्हीं के फ़ायदे के लिए किया जा सकता है। जहाँ जनसंख्या घनत्व 70,000 व्यक्ति/वर्ग किमी है, ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी यह परियोजना समुदाय के स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, खुले एवं हरे-भरे स्थान, स्वच्छता, ठोस कचरे का प्रबन्धन और सांस्कृतिक पुनरुद्धार की ज़रूरतों को सम्बोधित करती है।

आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन 2008 से निज़ामुद्दीन में एसडीएमसी स्कूल के सुधार कार्यक्रम में लगा हुआ है। परिणामस्वरूप स्कूल के बुनियादी ढाँचे में सुधार हुआ है, जिसमें भवन का अधिगम सामग्री के रूप में उपयोग करना, बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार आना, एसडीएमसी और एकेएफ द्वारा नियुक्त सामुदायिक शिक्षकों की क्षमता में वृद्धि होना और एक सक्रिय स्कूल प्रबन्धन समिति (एसएमसी) का बनना आदि शामिल हैं।

निज़ामुद्दीन एसडीएमसी स्कूल के बच्चों की पृष्ठभूमि

निज़ामुद्दीन और अन्य जगहों पर एसडीएमसी स्कूलों में दाख़िला लेने वाले अधिकांश बच्चे सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित परिवारों से आते हैं। उनके माता-पिता असंगठित क्षेत्रों (ऐसे क्षेत्र जहाँ रोज़गार कभी भी नियमित नहीं होता) में घरेलू नौकर, दिहाड़ी मज़दूरी, कचरा बीनने, रिक्शा चलाने या भीख माँगने जैसे काम करते हैं। इसके अलावा उनमें से कई बच्चे तो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं। कुछ बच्चे ख़ुद भी कबाड़ इकट्ठा करके या भीख माँगकर पारिवारिक आय में भी योगदान देते हैं।

1. अधिक विवरण के लिए www.nizamuddinrenewal.org देखें।

संक्षेप में, एसडीएमसी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे वे हैं जिन्हें किसी अन्य स्कूल में प्रवेश नहीं मिल पाया है या जिनके माता-पिता किसी अन्य स्कूल का ख़र्चा नहीं उठा सकते हैं या जिन्होंने स्कूलों में प्रवेश के लिए नियत आयु सीमा पार कर ली है।

2007 में स्कूल की स्थिति

स्कूल में प्रवेश करते ही स्कूल की भौतिक और शैक्षिक स्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। यह बात साफ़ नज़र आ रही थी कि इन दोनों समस्याओं से तत्काल निपटना ज़रूरी था। आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन ने किसी भी कार्य योजना पर निर्णय लेने से पहले मौजूदा स्थिति का अध्ययन करने और समुदाय के साथ जुड़ने का फ़ैसला किया।

विद्यालय की मूलभूत संरचना में सुधार

स्कूल भवन और इसके बुनियादी ढाँचे की स्थिति हर प्रकार से ख़राब थी। सबसे पहले तो बच्चों और समुदाय के साथ आयोजित एक कार्यशाला में चर्चा की गई जिसका विषय था कि वे अपने स्कूल को कैसा देखना चाहते हैं। उनसे मिले सुझावों के आधार पर एक सुधार योजना बनाई गई। इसके अलावा स्कूल के भवन का उपयोग अधिगम-सामग्री के रूप में किया गया था और इसे पास के पार्क से भी जोड़ा गया था, जिसे अतिक्रमण से आज़ाद कराना और सुन्दर बनाना था।

भवन का उपयोग अधिगम-सामग्री के रूप में करने के लिए कक्षा और गलियारों में अलग-अलग तरह के बोर्ड लगाए गए, जैसे डॉट बोर्ड, ग्रिड बोर्ड, वाक्य बोर्ड, कैलेण्डर, मापने के लिए पैमाने आदि। कक्षा-कक्ष के दरवाज़े खुलते समय कोण बनाते थे। खिड़कियों और सीढ़ियों पर लगी जालियों में अबेकस और सकल और सूक्ष्म मोटर कौशलों में सुधार के लिए डिज़ाइन बनाए गए। सुरक्षा मानदण्डों का ध्यान रखते हुए सीढ़ियों की चौड़ाई बढ़ाने और प्रत्येक कक्षा में एक और दरवाज़ा लगाने का कार्य पूरा किया गया।

स्कूल की शैक्षिक स्थिति

निज़ामुद्दीन स्कूल में शैक्षिक स्थिति को समझने के लिए आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन ने दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (सीआईई) को इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। इसने एक बेसलाइन के रूप में कार्य किया और हमें ऐसी रणनीति विकसित करने में सक्षम बनाया जिससे बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके और स्कूल तथा समुदाय के बीच अधिक-से-अधिक जुड़ाव बनाया जा सके ताकि स्कूल समुदाय के प्रति अधिक जवाबदेह बन सके।

बेसलाइन अध्ययन के द्वारा बच्चों के शैक्षणिक स्तर का भी मूल्यांकन किया गया। बच्चों के शैक्षिक स्तर से हमें पता चला कि भाषा और गणित विषय पर गहनता से काम करने की ज़रूरत है। इसके अलावा कक्षा की प्रक्रियाएँ पूरी तरह से पाठ्यपुस्तकों से पाठ्यक्रम पूरा करवाने पर ही केन्द्रित थीं, ऐसी प्रक्रियाएँ और अभ्यास नहीं के बराबर थे जो कक्षा में सीखने का माहौल तैयार करने में योगदान कर सकें।

विद्यालय में शैक्षिक सुधार

इसमें एक प्रमुख हस्तक्षेप यह था कि कक्षा में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने के तरीक़े में परिवर्तन लाने के लिए उचित रणनीति का प्रयोग किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 की सिफ़ारिशों के बाद 2010 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा नई पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गईं। नई पाठ्यपुस्तकें गतिविधियों पर आधारित हैं और अनुभव आधारित अधिगम पर केन्द्रित हैं। इसके अलावा इन पाठ्यपुस्तकों ने कक्षा में सीखी हुई बातों के अपने जीवन में अनुप्रयोग करने की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित किया। लेकिन बच्चों को इस बदले हुए दृष्टिकोण का लाभ नहीं मिल पाया।

कक्षाओं के अवलोकन और शिक्षकों के साथ विचार-विमर्श से पता चला कि बच्चों को पढ़ना सीखने में बहुत मुश्किलें आ रही थीं जिससे आगे की सभी प्रक्रियाएँ प्रभावित हो रही थीं। चौथी और पाँचवीं कक्षा का भी यही हाल था। शिक्षकों ने इसके कई कारण बताए। जैसे घर का माहौल और पाठ्यपुस्तकों में बदलाव आदि। कई सरकारी शिक्षक मानते थे (और कुछ अभी भी मानते हैं) कि

वर्णमाला सीखे बिना पढ़ना सीखना असम्भव है। बातचीत से पता चला कि नई पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने या नए दृष्टिकोण के बारे में शिक्षकों को अब तक किसी भी तरह का उन्मुखीकरण या किसी भी तरह का सेवाकालीन प्रशिक्षण नहीं मिला था। ज़रूरत इस बात की थी कि पाठ्यपुस्तकों को लेकर दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली में जो परिवर्तन हुआ है, उस पर चर्चा की जाए और साथ ही इससे जुड़ी रणनीति तैयार करने में शिक्षकों की मदद की जाए।

बाद के प्रशिक्षण कक्षा में नई पाठ्यपुस्तकों के उपयोग के विषय पर तैयार किए गए। सरकारी स्कूल के निरीक्षक से जुड़ी एक घटना यह दिखाती है कि पढ़ना सीखने के बारे में लोगों के मन में किस तरह के विचार गहराई से बैठे हुए हैं। प्रशिक्षण के दौरान हमने जिन संसाधनों का उपयोग किया था, *पढ़ने की समझ* उनमें से एक था जिसे एनसीईआरटी के *रीडिंग सेल* द्वारा प्रकाशित किया गया था। चर्चा उन तरीक़ों पर हो रही थी जिनके द्वारा बच्चे पढ़ना सीखते हैं और पढ़ना सीखने के दौरान किस प्रकार की चुनौतियाँ उनके सामने आती हैं। तभी स्कूल निरीक्षक महोदय ने कक्षा में प्रवेश किया, एक नज़र डाली और कहा, "आप यह सब क्यों सिखा रहे हैं? शिक्षकों को यह बताइए कि क, ख, ग कैसे पढ़ाया जाए" और बिना यह जानने का इन्तज़ार किए कि भाषा को कैसे पढ़ाया जा सकता है और एनसीएफ़ में इसके क्या दिशा-निर्देश दिए गए हैं, कक्षा से बाहर चले गए।

लेकिन आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन ने अपने दृष्टिकोण को जारी रखते हुए पाठ्यपुस्तकों को उसी भावना से उपयोग करने में शिक्षकों की मदद की जिस भावना के साथ उन्हें लिखा गया था। इस दृष्टिकोण को जारी रखने के परिणाम बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों में दिखने शुरू हो गए। जब एकेएफ़ द्वारा नियुक्त सामुदायिक शिक्षक और सरकारी शिक्षक संयुक्त रूप से योजना बनाने लगे और एक साथ काम करने लगे तो कक्षा का माहौल बदलने लगा। आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन ने स्कूल की परीक्षाओं से अलग अपना वार्षिक मूल्यांकन आयोजित किया जिसमें बच्चों के प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार पाया गया। 2013 में हुए मूल्यांकन से पता चला था कि पाँचवीं कक्षा में केवल 26% बच्चे पाठ पढ़ पाते थे और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दे पाते थे। 2017 तक यह आँकड़ा बढ़कर 71% हो गया।

कक्षा की वीडियो रिकॉर्डिंग का उपयोग करना एक प्रभावी कार्यप्रणाली के रूप में उभरा। कार्यशाला के दौरान एक सत्र रिकॉर्ड किया गया जिसमें शिक्षक कक्षा में एक पूर्व-निर्धारित पाठ योजना के आधार पर पाठ पढ़ा रहे थे। सामूहिक रूप से इस पाठ की रिकॉर्डिंग का विश्लेषण किया गया और यह जानने की कोशिश की गई कि कौन-सी रणनीतियाँ कारगर थीं और किन रणनीतियों में सुधार करने की ज़रूरत थी। शिक्षकों की बेहतरी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम को डिज़ाइन करने के लिए यह रणनीति काफ़ी कारगर साबित हुई। एनसीईआरटी की संसाधन पुस्तकें जैसे 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम' (रिमझिम एक पाठ्यपुस्तक है) काफ़ी प्रभावी साबित हुई।

समुदाय के साथ जुड़ाव

आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन के स्कूल सुधार कार्यक्रम में यह तीसरा बड़ा हस्तक्षेप है। निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (आरटीई) के अनुसार स्कूल प्रबन्धन समिति (एसएमसी) का गठन अनिवार्य है। प्रारम्भिक प्रतिरोध के बाद अब स्कूल प्रबन्धन समिति बनाई गई है। यह समिति काफ़ी सक्षम होती जा रही है और नियमित रूप से स्कूल के कामकाज पर नज़र रखती है और उसकी रिपोर्ट स्कूल निरीक्षक से लेकर निदेशक तक को भेजती है और एक प्रति एसडीएमसी काउंसलर को भी भेजी जाती है।

इसके अलावा आगा ख़ान फ़ाउण्डेशन द्वारा नियमित रूप से कार्यक्रमों और बैठकों का आयोजन किया जाता है जिनके माध्यम से समुदाय को स्कूल के साथ जुड़ने के कई अवसर मिलते हैं।

कुछ विचारणीय बिन्दु

नई पाठ्यपुस्तकों को शुरू करने का तरीक़ा क्या होना चाहिए, विशेष रूप से उन पाठ्यपुस्तकों को जो पूरी तरह से नए दृष्टिकोण पर आधारित हों

और उनसे अपेक्षा यह हो कि इस दृष्टिकोण को अनुकूलित किया जाए?

शिक्षा के क्षेत्र में जो नई बातें विकसित हो रही हैं उन्हें शिक्षकों तक पहुँचाने के लिए अकादमिक सहायता तंत्र क्या है, विशेष रूप से अगर समर्थन और अनुश्रवण का प्राथमिक स्रोत, यानी विद्यालय के निरीक्षक, इस नए दृष्टिकोण से सहमत न हों तो?

ज्योत्स्ना लाल सामाजिक विकास के क्षेत्र में 30 वर्षों से कार्यरत हैं। वर्तमान में वे आगा ख़ान विकास नेटवर्क के निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण पहल में कार्यक्रम निदेशक हैं। उनसे jyotsna.lall@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

हैदर मेहदी रिज़वी आगा ख़ान विकास नेटवर्क के निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण पहल के लिए शिक्षा कार्यक्रम के प्रमुख हैं। उनसे hydermehdi.rizvi@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** सात्विका ओहरी **कॉपी एडिटर :** अंजना राव